भारत वर्ष में कुम्भ पर्व

भारत अपनी अति प्राचीन परम्पराओं को भी जीवन्त रूप इस कारण दे सका क्योंकि उसमें विश्वासनीयता है, वैज्ञानिकता है, वैदिक एवं पौराणिक कथाओं का व्यापक समर्थन एवं अनन्त फल ही प्राप्ति का सन्देश है। पूर्ण कुम्भ, अर्ध कुम्भ, महाकुम्भ इन शब्दों से भारतीय जनता वैदिक काल से ही अवगत रही है। कलश का ही पर्यायवाची शब्द कुम्भ है। यह आदिम जनजातियों में प्रचलित रहा होगा। अमृत कलश की जगह अमृत कुम्भ समाज में अत्यधिक प्रचलित रहा होगा इसलिए कुम्भ महापर्व की अवधारण आज भी यथावत् है। **ऋग्वेद** तीर्थयात्रा के क्रम में कुम्भ की महत्ता का गुणगान करता है :–

जधान वृत्रं स्वधिति वंनेव रूरोज पुरो अरन्दन्न सिन्धूनः ।

विभेद गिरिं नवभिन्नकुम्भं भागा इन्द्रो अकृणुता स्वयुञ्भिः ।। **10/89/07**

कुम्भो वेद्यां मा व्यथिष्ठा ।

यज्ञा युधै राज्ये नातिषिक्ता ।। **ऋ; 12/3/23**

अर्थात् तीर्थयात्रा के क्रम में कुम्भ स्नान पापों को नाश करने वाला कहा गाया है। सत्कर्म, दान आदि कार्यों से पाप उसी तरह नष्ट हो जाते है, जैसे सिन्धु नदी अपने तटों को काटते हुए अपने जल में प्रवाहित कर लेती है उसी तरह मनुष्यों के कई जन्मार्जित पापों का कुम्भ स्नान प्रक्षलित कर देती है।

शुक्ल यजुर्वेद का कथन है की :–

कुम्भों बनिष्टुर्जनिता शचीभयमिन्नग्रे योन्यां गर्भोअस्तः ।

ब्लाशिर्व्यकतः शतधारऽउत्सों दुहे न कुम्भी स्वघां पितृम्यः ।। **(19/87)**

कुम्भ पर्व लौकिक एवं परलौकिक सुखों को प्रदान करता है। जो सुख सत्कर्म, दान एवं यज्ञों में आहुति प्रदान करने से प्राप्त होते है वह कुम्भ स्नान एवं दान से प्राप्त हो जाते है।

अथर्ववेद की घोषणा है कि :–

पूर्णः कुम्भोऽधिकाल अहितस्तं वै पश्यामो बहुधानु सन्तः ।

स इमा विश्वाभुवनानि काल तमाहु परमे व्योमनः ।। **अर्थव 19/53/3**

अर्थात पूर्ण कुम्भ समय–समय पर विभिन्न स्थानों में दिखाई देता है। अर्थात् 12 वर्षो के अन्तराल में हरिद्वार, प्रयाग, नासिक एवं अज्जैन में यह कुम्भ महापर्व सूर्य, वृहस्पति एवं चन्द्रमा के विभिन्न राशियों के योग से होता है।

चतुरः कुम्भांश्चतुर्धा वदामि । **अर्थव, 4/34/7**

चारों कुम्भ पर्व चार जगहों पर पावन तीर्थ स्थल के रूप में प्रतिष्ठित रहे है। इसका विस्तार पुराण साहित्य में देखने को मिलता है। कुम्भ प्रतीक है, अमृत कुम्भ का जो समुद्र मंथन के क्रम में भगवान् धन्वन्तरी लेकर समुद्र से बाहर आये। इन्द्र पुत्र जयन्त ने उस कलश को लेकर आकाश में कही छिपाना चाहते थें किन्तु देव–दानव दोंनो ने मंथन किया था इसलिये कुम्भ के लिये 12 दिनों तक दोनों के बीच संघर्ष हुऐ थे। देवों का एक दिन मनुष्य का एक वर्ष होता है। इस तरह 12 वर्ष संघर्ष का प्रतीक है। चूँकि अमृत कुम्भ की रक्षा करने में सूर्य, वृहस्पति एवं चन्द्रमा की महती भूमिका रही इस कारण इन ग्रहों की स्थिति का योग जब बनता है तभी कुम्भ पर्व मनाया जाता है।

यह कहना सभीचीन है कि भारतीय तीर्थो एवं पर्वो के पीछे सांस्कृतिक एकता, सहिष्णुता, एवं सामाजिक समरसता का संदेश छिपा हुआ है। इसे चार स्थलों पर 3 वर्षो की अन्तराल पर पर्व के रूप में मनाने का अद्भभुत प्रयास आदि शंकरचार्य ने – 8वीं सदी में किया। हेव्नसांग ने भी प्रयाग में कुम्भ स्नान तथा शिलादित्य अर्थात् हर्षवर्द्धन के दान का उल्लेख किया है।

पुराणकारों ने कथा को रोचक बनाने के लिये फलों की लम्वी सूची दी है। देव–दानव संघर्ष के कारण चार जगहों पर कुछ अमृत वूदें धरती पर गिरी वे ही चार स्थल है– हरिद्वार, प्रयाग नासिक एवं उज्जैन–इन चारों में प्रयाग का विशेष महत्व है। यहां कई उत्कृष्ट यज्ञ सम्पन्न हुये इसलिए यह प्रयाग कहलाता है। तीन नदियां के संगम के कारण इसे तीर्थ राज की संज्ञा से भी अभिहित किया जाता है।

हर तीन वर्ष के अन्तराल पर हरिद्वार से यह आरम्भ होकर प्रयाग, नासिक एवं उज्जैन तक पहुंचता है।

<u>हरिद्वार</u>– वृहस्पति कुम्भ राशि में (**चैत्र माह में चन्द्रमा**)

सूर्य मेष राशि में (**मार्च – अप्रैल**)

<u>प्रयाग</u>– वृहस्पति वृश्चिकराशि में

सूर्य मेष राशि में प्रवेश कर रहा हो

एक अन्य अवधारणा – वृष राशि में वृहस्पति के प्रवेश होने पर

मकर राशि में सूर्य के प्रवेश पर – **(माघमाह)**

(जनवरी–फरवरी)

नासिक– सिंहराशि में वृहस्पति तथा कर्क राशि में

सूर्य एवं चन्द्र के प्रवेश होने पर गोदावरी के तट पर नासिक

में कुम्भ – **(भाद्रपदमाह)**

(अगस्त, सितम्बर)

उज्जैन– क्षिप्रा नदी के तट पर |

वृहस्पति सिंह राशि में | **कार्तिक अमावस्या**

सूर्य मेष राशि में |

सिंहस्थ कुम्भ होता है |

उपर्युक्त योग आकाश मण्डल में जब गणना के आधार पर आता है तब शुभ पुण्य काल उन स्थलो में माना जाता है।

स्नान–दान और हरिकथा का श्रवण अक्षय फल देता है।